SRI GURU HARI SINGH COLLEGE

SRI JIWAN NAGAR (SIRSA)

40

Q.No.	For Examiner's Award only				
	A	B	C	D	Total
1					
2					
3					
4					
5					
6					
7					
8					
9					
10					
Total in Figures					
Total in Words					

I certify that I have myself examined the Answer book.

....

Examiner's full Signature

[To be filled in by the candidate]

(For Candidate)

1. Roll No.

1222382002133

2 Class B.A. 2 year "III Sem"

3 Subect English

4 Date 23/10/2024

INSTRUCTIONS

I Do not tear out any Paper from the Answer Sheet

II Copying is strictly prohibited.

III Write legibly & neatly

IV Do not bring any extra paper in the Examination Hall.

V Do not write your name.

VI No candidate will be allowed to leave the Examination hall before half time is over.

VII Do not write on the back of title Page

No.

[To be filled in by the candiddate]

Roll No.

(i) In Figure..............................

(ii) In Words..............................

1 Class B.A. 2end year "3 Sem"

2 Section (A)

3 Subject English

4 Date 23/10/2023

1. Created half to rise, and half to fall; ...

Ans This poem writen by "Alexder pope" in "They know Theyslfs" in this poem poem the poet commant man's position in the world.

exple:- In this poem, the poet commant man's position in the world. He says that :- The god made the man that rise and equile to the god. The man lord of all things the poet says that yet a prey to all. The man sole judge of truth yet the man glory, jest and riddle of the world.

b. ii) In this poem "Elegy written in a country churchyard" The poet "Elegy" to the simple villager's death. these peoples life and death ~~un-honder~~ honounder. They were not imporetan people so tribite in Ordinery churchyard. The some peoples they shoud be great Singr and Some great dancer and Some great musjustion but in his poverty, should not woke up. and gave a life and death unhonder: the poet proud in Simplesity and tribute a Elegy Song. In his evening time the poet

Siting in a churchyard near by brawer. He hear cry of a owl. The poet things that the owl compleene the moon that who distrube his place.

iii) In this poem the poet says that the man are compeletely metrilum the man waste his power driving and spending money. He says that the man is great being been. The man lord of all things yet a prey to all. But man his not carefull for the nature. So the poet says that the man completely metrisum in the world.

3. (1.) In this world many things are tempreery and some things are permant. According to the poet "Art" is permant and human's life are temprery. Then the poet see's the beautiful "Urn" then he says that "art" is permant the poet see the beautiful ~~pich~~ photos on the urn trees, cows, peoples. He is relise the real life in the before young genretion. because time to this time meny people death. But the urn

is permanent when the young generation Old and new genration born Then the urn ~~is~~ Permanent and his beauty is consent. So the poet Says that the beauty is truth and truth is beautiful. It is a universal truth.

II. "They know Theyslfe" One is the famous poem's "Alxender Pope."
In this poem the poet comment man's position in the world. Man is a middle State between being an animal and being an god. The god made the mane that rise and equle to the got but Some limitations so his not pasibule. According to the poet the man study "them Slfe" a good man and after studing to god. He know that own position in the world. The man confused wich act, and rest. So. According to the poet the man know own position in the world.

4. (a) Chaos :- /tʃaʊs/ (b) Strife :- /straɪf/
(c) pagan :- /peɪgən/ (d) Haunt :- /hɔnt/
(e) glowing :- /gləʊɪŋ/

(f) (ii) ~~Elegy~~ Elegy

(5) (i) to help

(ii) watching

iii) If you put the pen back in the table

(iv) If I go to college by foot

(v) My uncle is coming for the party

(vi) ~~When~~ when
(vii) for
(viii) and

(ix) ~~because~~ but.

(x) but

(xi) on

(xii) Mother told us, that she is very well.

(xiii) I agree that, yours idea's.

(xiv) How can you juge that I am right

(xv) He went by bus because, I am late.

(xvi) yes

(xvii)

(xviii) you shoul work hard and you.

(2.)(1) The simple villager's life and dead was un-honoured. He is not importent peopel. So his budes Ordinury Chirchyard.

(viii) We full shauth full in their actions

(ii) He man loves the beauty and nature.

(v) Tagore mean by beses of casts and education

(C) Elage:- Is a death song in forteen lins

Notebook
Date : / /
Page:

8

SRI GURU HARI SINGH COLLEGE
(SRI JIWANNAGAR)

ASSIGNMENT : POLITICAL SCIENCE

SUBMITTED TO : DR. AMANDEEP SIR

SUBMITTED BY : DHAPAN DEVI

ROLL NO : 1212382002001

SEMESTER : 5th SEM.

YEAR : 3rd. YEAR

NoteBook

Name: DHAPAN DEVI
Class: B.A. 3rd Year
Subject: POLITICAL Science
Roll No.: 1212382002001
Semester: 8th Sem
Year: 3rd Year

Sr.	Date	Experiment Description	Page. No.	Submission Date	Remarks/Sign.
1.		अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध: अर्थ स्वरूप एवं क्षेत्र	1-5		
2.		अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का एक अध्ययन विषय के रूप में विकास	6-8		
3.		अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध: एक स्वायत अध्ययन विषय	9-11		
4.		अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का अध्ययन करने वाले दृष्टिकोण	12-15		

अध्याय -> 1

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध : अर्थ, स्वरूप एवं क्षेत्र

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का अर्थ :- अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति विशेषतः दो शब्दों 'अन्तर्राष्ट्रीय' एवं 'राजनीति' का योग है, जिसे स्पष्ट करने के लिए यदि हम पूर्व में 'राजनीति' शब्द के अर्थ एवं उत्पत्ति को समझ लें तो स्वयः ही अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का अर्थ स्पष्ट हो जाएगा।

राजनीति का अर्थ :- यह शब्द मूलतः संस्कृत भाषा का है, जिसका अर्थ है 'राजा की नीति'। किन्तु वर्तमान सन्दर्भ में इस शब्द का जिस अर्थ में प्रयोग होता है वह इससे अधिक व्यापक एवं भिन्न रूप में है। व्यापक अर्थ में राजनीति एक ऐसी प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य किन्हीं विशेष मूल्यों से युक्त लक्ष्यों को प्राप्त करना होता है।

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की परिभाषा :-

1. **एच. जे. मॉर्गेन्थो :-** के अनुसार, "राष्ट्रों के मध्य शक्ति के लिए संघर्ष तथा उसका प्रयोग अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति कहलाता है।"
2. **पॉलिक्स ग्रास :-** के शब्दों में, "अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति वास्तव में राष्ट्रों की विदेश नीतियों का अध्ययन है।"

*** अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का क्षेत्र या विषय-वस्तु ***

जैसा कि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध के अर्थ के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का और शक्ति-संघर्ष अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का सबसे महत्वपूर्ण अंग है। राज्यों के सम्बन्ध प्रधानतः संघर्षात्मक होते हैं, परंतु जैसा कि हम पहले पढ़ चुके हैं कि शक्ति-संघर्ष अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का प्रधान तत्व है, परन्तु एकमात्र तत्व नहीं है। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध के अन्तर्गत राज्यों के संघर्षात्मक सम्बन्धों पर विशेष ध्यान दिया जाता है, परन्तु साथ ही सहयोगात्मक सम्बन्धों की भी उपेक्षा नहीं की जाती है। वर्तमान में बदलते अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश एवं उसके परिणामस्वरूप उत्पन्न परिस्थितियों एवं नित्य तकनीकी उन्नति के परिवर्तित स्वरूप ने अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के विषय-क्षेत्र को निरन्तर व्यापक बनाने का कार्य किया है। यहाँ हम संक्षेप में निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के विषय-क्षेत्र को स्पष्ट करने का प्रयास करेंगे-

शक्ति-संघर्ष का अध्ययन :- अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध राष्ट्रों के मध्य शक्ति-संघर्ष के इर्द-गिर्द ही संचालित होते हैं। प्रो० हंस जे० मार्गेन्थो ने लिखा है- "अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति प्रत्येक सम्बन्ध की भाँति शक्ति-संघर्ष है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का अन्तिम लक्ष्य चाहे जो कुछ भी हो शक्ति सदैव तात्कालिक लक्ष्य रहती है। इसलिए राष्ट्रों के समुदाय में प्रत्येक राष्ट्र की शक्ति-अर्जन, रक्षण एवं संवर्द्धन सम्बन्धी क्रियाकलापों को हम अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों की विषय-वस्तु में सम्मिलित हैं।

राज्यों के बाह्य व्यवहार का अध्ययन :- अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के प्रमुख

पात्र राज्य होते हैं तथा इसके अन्तर्गत राज्यों के बाह्य व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। राज्यों के आपसी सम्बन्धों का अध्ययन इसके विषय-क्षेत्र में आता है क्योंकि एक देश को अपनी सीमा क्षेत्र से बाहर अन्य राज्य के सम्बन्ध में ज्ञान अर्जित करना होता है।

राष्ट्रीय हितों का अध्ययन :- राष्ट्रीय हित एक ऐसा उद्देश्य है जिसे प्रत्येक राष्ट्र अपने राष्ट्रों के सम्बन्धों के द्वारा प्राप्त करना चाहता है। इसलिए विभिन्न राज्यों की विदेश नीति के निर्माण में उनके राष्ट्रीय हितों की निर्णायक भूमिका होती है। राष्ट्रीय हित के सन्दर्भ में ही विदेश नीति का निर्माण होता है।

युद्ध एवं शान्ति का अध्ययन :- अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में युद्ध और शान्ति महत्वपूर्ण विषय है। विभिन्न राष्ट्रों में गम्भीर मसलों पर युद्ध स्वाभाविक हैं। युद्ध एवं शान्ति सम्बन्धी प्रत्येक गतिविधि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों की पूर्ण अभिव्यक्ति की महत्वपूर्ण विषय बन गई है।

अन्तर्राष्ट्रीय कानून का अध्ययन :- अन्तर्राष्ट्रीय कानून युद्ध और शान्ति दोनों सम्बन्धित हैं, इसलिए ये अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की विषय-परिधि में अपने-आप आ जाते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय कानून युद्ध को मानवीय बनाने का प्रयास करते हैं, यद्यपि युद्ध और मानवीयता में सम्बन्ध असंगत लगता है। इसलिए अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में अन्तर्राष्ट्रीय कानून का अध्ययन भी सम्मिलित है।

विदेश नीति का अध्ययन :- फ़ीलिक्स ग्रास का यह कहना है कि वास्तव में

राष्ट्रों की विदेश नीतियों का अध्ययन ही अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति है। इसका सीधा-सा अर्थ यह हुआ कि कोई भी अध्येता या विद्यार्थी विभिन्न राष्ट्रों की विदेश नीतियों के अध्ययन के बिना राष्ट्रों के आपसी सम्बन्धों को नहीं समझ सकता।

राष्ट्रीय चरित्र का अध्ययन :- अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था में विभिन्न राष्ट्रों की विदेश नीति के निर्माण में सम्बन्धित राष्ट्र के लोगों के चरित्र का महत्वपूर्ण योगदान होता है, लेकिन अन्तर्राष्ट्रीय जगत में सभी राष्ट्रों का आचरण एक जैसा नहीं होता। कुछ राष्ट्र अधिक शान्तिप्रिय होते हैं तो कुछ हमेशा तनावपूर्ण स्थिति को बनाए रखना चाहते हैं।

कूटनीतिक सम्बन्धों का अध्ययन :- अन्तर्राष्ट्रीय सजीव राजनीति के क्षेत्र में राजनयिक सम्बन्धों का भी अध्ययन किया जाता है। जब एक देश अपने सीमा-क्षेत्र से बाहर अन्य देशों से अपने सम्बन्धों को स्थापित करता है, तो उसे हम राजनीतिक सम्बन्ध कहते हैं। राजनीतिक सम्बन्धों के बिना आज कोई भी राष्ट्र जीवित नहीं रह सकता।

राष्ट्रीय शक्ति का अध्ययन :- आज के अन्तर्राष्ट्रीय के युग में प्रत्येक राष्ट्र अपने हितों के अनुसार दूसरे राष्ट्रों के कार्यों, व्यवहारों तथा नीतियों को प्रभावित एवं नियन्त्रित करने का कार्य अपनी राष्ट्रीय शक्ति के आधार पर ही करता है। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय शक्ति में परिवर्तनशीलता का तत्व पाया जाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के नियन्त्रकों का अध्ययन:- अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में राष्ट्रों के व्यवहार को नियन्त्रित और निर्देशित करने वाली कुछ अवधारणाओं; जैसे शक्ति-सन्तुलन, सामूहिक सुरक्षा, विश्व जनमत, अन्तर्राष्ट्रीय नैतिकता, खेल सिद्धांत आदि का अध्ययन तथा विश्लेषण भी इसकी विषय-वस्तु में सम्मिलित होता है।

सैनिक संगठनों व गुटों का अध्ययन:- द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद साम्यवादी गुट स्वतन्त्र समाज, गुट-निरपेक्ष देशों का गुट, अरब समुदाय, अफ्रीका देश जैसे अनेक गुट अस्तित्व में आए। ये गुट संयुक्त राष्ट्र संघ के मंच पर अनेक मामलों में मिल-जुलकर कार्य करते हैं। इन गुटों को जोड़ने वाले तत्व, उनके विवादों व मतभेदों का अध्ययन अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के क्षेत्र में आता है।

निःशस्त्रीकरण का अध्ययन:- वर्तमान समय में विश्व में शस्त्रों की होड़ बहुत बढ़ी है, जबकि विश्व में शांति के लिए निःशस्त्रीकरण आवश्यक है। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में इसका भी अध्ययन होता है। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों की प्रक्रिया को समझने के लिए इसमें मानवीय व्यवहार व सांस्कृतिक व्यवहार का भी अध्ययन किया जाता है। दूसरे शब्दों में, ये भी अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं।

निष्कर्ष:- उपर्युक्त दिए गए विवेचन के उपरान्त यह स्पष्ट है कि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों की विषय-वस्तु या क्षेत्र में वे सम्बन्ध एवं क्रियाकलाप आते हैं जिन्हें एक राज्य दूसरे राज्यों के साथ स्थापित करते हैं।

अध्याय - 2

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का एक अध्ययन विषय के रूप में विकास

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का एक अध्ययन विषय के रूप में विकास के चरण:- वास्तव में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को एक स्वायत्त एवं स्वतन्त्र सामाजिक विज्ञान के रूप में विकसित होने में अनेक सोपानों से होकर गुजरना पड़ा है। द्वितीय विश्वयुद्ध तक अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को सामाजिक विज्ञान की एक पृथक शाखा के रूप में नहीं जाना जाता था, यद्यपि प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्ध के मध्य की अवधि में अन्तर्राष्ट्रीय कानून और संगठन द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को संस्थागत बनाने पर जोर दिया था। द्वितीय विश्वयुद्धोपरान्त अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति विभिन्न सोपानों को पार करते हुए विकास की महत्वपूर्ण मंजिलों से गुजरते हुए वर्तमान अवस्था में पहुँची है। केनेथ डब्ल्यू० थॉम्पसन के अनुसार, बीसवीं सदी में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के अध्ययन को विभिन्न काल अवधियों के आधार पर चार भागों में विभाजित किया जा सकता है, जिन्हें केनेथ डब्ल्यू० थॉम्पसन अवस्थाओं के नाम देते हैं, जिन्हें निम्नलिखित रूप से दर्शाया जा सकता है।

कूटनीतिक इतिहास का प्रभाव:- इस विषय की प्रथम अवस्था बीसवीं सदी के प्रारम्भ से प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति के आस-पास तक की है। प्रारम्भिक अवस्था में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति विषय की निकटता इतिहास व इतिहासकारों से रही है। इस युग के अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों एवं राजनीति को कूटनीतिक इतिहास की संज्ञा दी जाती है। इस अवस्था में राजनीतिक इतिहासकारों का बहुमत और प्रभाव था

इस काल में राजनीतिक इतिहासकारों ने प्रमुख घटनाओं की समीक्षा एवं विश्लेषण करने की अपेक्षा तिथीक्रम के अनुसार उनका वर्णन किया है। उन्होंने यह विश्लेषण करने के प्रयत्न नहीं किया कि इन घटनाओं का मानव-व्यवहार से क्या सम्बन्ध था।

समकालीन घटनाओं और समस्याओं के अध्ययन पर बल :- द्वितीय अवस्था प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति से प्रारम्भ होती है। वेल्स विश्वविद्यालय में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों की वुडरो विल्सन पीठ की स्थापना से इस विषय के अध्ययन में एक नया अध्याय सामने आया। इस काल में सामयिक घटनाओं तथा समस्याओं का अध्ययन अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का मुख्य उद्देश्य माना जाने लगा। विद्वानों द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक उतार-चढ़ाव तथा समस्याओं की व्याख्या करने एवं राष्ट्रों के मध्य दिन-प्रतिदिन के सम्बन्धों को समझने एवं समीक्षा हेतु समाचार-पत्रों एवं पत्रिकाओं की समीक्षा करने आदि को भी आवश्यक माना जाने लगा। इस तरह इस काल के विद्वानों ने ऐतिहासीक पूर्वाग्रह के स्थान पर तात्कालीक घटनाओं के अध्ययन को महत्व प्रदान किया। इस काल में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक के बारे में सम्पूर्ण दृष्टि का अभाव था, क्योंकि इस काल में भूतकालीन राजनीतिक घटनाओं की उपेक्षा करते हुए वर्तमान के अध्ययन पर ही अधिकाधिक बल दिया गया।

राजनीतिक सुधारवाद का युग :- अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध एवं राजनीति के विकास की तृतीय अवस्था में भावनात्मक आदर्शवादी एवं कल्पनाशील सुधारवादी दृष्टिकोण द्वितीय अवस्था के

साथ-2 चलता रहा है। प्रथम व द्वितीय विश्वयुद्ध के मध्य इस अवस्था का स्वरूप बना रहा। उस समय विद्वानों में अन्तर्राष्ट्रीय समाज की भावना प्रबल हुई एवं ऐसा समझा जाने लगा कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की जो प्राचीन मान्यताएँ हैं उनका अन्त हो जाएगा और अन्तर्राष्ट्रीय विधी तथा संगठन द्वारा राष्ट्रों के पारस्परिक सम्बन्ध निश्चित किए जाएंगे। दो विश्वयुद्धों के मध्य अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के संस्थाकरण पर बल दिया गया। विश्व समुदाय के सामने उपस्थित 'युद्ध और शान्ति' की समस्याओं का निराकरण अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के निर्माण द्वारा सम्भव हो जाएगा। अन्तर्राष्ट्रीय विधी एवं संगठन पर इस समय ज्यादा जोर दिया गया।

सैद्धान्तिकरण के प्रति आग्रह :- द्वितीय विश्वयुद्धोपरान्त अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध एवं राजनीति के नए युग का सूत्रपात हुआ। दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान हिरोशीमा एवं नागासाकी पर गीराए गए अणु बमों तथा सामाजिक विज्ञानों के अध्ययन में व्यवहारवाद पर बल दिए जाने के कारण उत्पन्न अध्ययन की नवीन पद्धति ने संस्थागत एवं कानूनी अध्ययन की बजाय व्यावहारिक अध्ययन पर बल दिया। इस चरण की मुख्य विशेषता है-राष्ट्रों के पारस्परिक सम्बन्धों की सैद्धान्तिक खोज। यह युग यह मानकर चलता है कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्येता की रुचि केवल अतीत या वर्तमान में न होकर भविष्य के अध्ययन में भी होती है। इस युग में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में सैद्धान्तिकरण की खोज करने की एक निश्चित प्रक्रिया का प्रारम्भ हुआ।

अध्याय - 3

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध : एक स्वायत अध्ययन विषय

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध एक स्वायत्त विषय है :-

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध या राजनीति को एक स्वतन्त्र अनुशासन मानने वाले विद्वानों में क्विन्सी राइट मैनिंग तथा श्लाइचर के नाम प्रमुख हैं। इनका विचार है कि यदि अनुशासन की परिभाषा को इतिहास, राजनीतिक-शास्त्र और अर्थशास्त्र; जैसे अन्य स्वीकृत सामाजिक विज्ञानों पर कठोरता से लागू किया जाए तो इनमें से कोई भी स्वतन्त्र विषय होने की कसौटी पर खरा नहीं उतरेगा इस तरह अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को एक स्वतन्त्र विषय कहलाने के दावे को जाँच करने में हमारा उद्देश्य यह नहीं है कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति स्वतन्त्र विषय की कठोर परिभाषा की कसौटी पर खरी उतरती है या नहीं, बल्कि हमारा उद्देश्य तो यह जानना हैं कि यह उन ज्ञान राशीयों के समान है या नहीं, जिन्हें साधारणतः हम विषय या अनुशासन कहते हैं। विभिन्न विद्वानों के निम्नालीखित तर्कों के माध्यम से यह स्पष्ट किया जा सकता है -

1. **मैनिंग :- महोदय** का कहना है कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति एक वृहत विषय तथा विशाल सामाजिक विश्व का एक अंग है। अपने मत के समर्थन में उन्होंने निम्नालीखित तीन तर्कों का उल्लेख किया है :-

(i) सामाजिक विश्व के अन्तर्गत, सम्पूर्ण संसार में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का एक जाल है, अतः अन्तर्राष्ट्रीय राजनीती का एक स्वतन्त्र विषय के रूप में अध्ययन करना आवश्यक है।

(ii) अन्तर्राष्ट्रीय राजनीती के अध्ययन के लिए एक

विश्वव्यापी दृष्टिकोण का होना आवश्यक है। यह दृष्टिकोण तब तक सम्भव नहीं है जब तक अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को एक स्वतन्त्र विषय का स्तर न प्रदान किया जाए।

(i) अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का लाभ हमें तभी हो सकता है जब विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं एवं समस्याओं की स्थिति को ठीक प्रकार से समझा न जा सके और उनकी समस्याओं एवं प्रतिकूल परिस्थितियों को नियन्त्रित किया जा सकता है।

क्विन्सी राइट :- ने अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को एक स्वतन्त्र विषय मानने के लिए अपना तर्क दिया है कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का विषय आज दूसरे विभिन्न विषयों से लाभ उठाकर समन्वयात्मक ढंग से उत्तरोत्तर विकास की ओर अग्रसर होता जा रहा है।

राइट :- महोदय यह मानते हैं कि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का विषय अन्य विषयों से इस बात से भिन्न है कि यह बहुत से दूसरे विषयों के संश्लेषण के लिए किए गए प्रयासों से पनपता है और आगे पनपता रहेगा।

कैपर जॉनसन :- के विचार में, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को इतिहास अथवा राजनीति-शास्त्र का अंग नहीं माना जा सकता क्योंकि इसका क्षेत्र उससे कहीं अधिक व्यापक है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति-शास्त्र जो सामग्री एकत्रित करता है, वह दूसरे शास्त्रों की सामग्री से भिन्न है।

हॉफसन :- ने अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के स्वतन्त्र अस्तित्व के सम्बन्ध में एक अलग तर्क देते हुए कहा है कि यह विश्व-राज्य रूपी विभिन्न इकाइयों में विभाजित है।

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का उन सभी विविध क्रियाओं और विषयों से गहरा सम्बन्ध है जो विश्व की विभिन्न राज्यों के आन्तरिक मामलों का विवेकपूर्ण अध्ययन तभी किया जा सकता है।

स्टैनले हॉफमैन :- भी अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की स्वायतता की वकालत करते हुए तर्क देते हैं कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को राजनीतिक-शास्त्र, इतिहास अथवा अर्थशास्त्र का अंग मानना भी उचित नहीं है, क्योंकि वास्तव में अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का क्षेत्र इनसे अधिक विस्तृत है।

ए० एल० बर्न्स :- यह तर्क देते हैं कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति एक स्वतन्त्र तथा स्वायत विषय है, जिसका अपना विशिष्ट अध्ययन-क्षेत्र, ज्ञान तथा अध्ययन की निश्चित विधीयाँ हैं। इसे राजनीति विज्ञान या इतिहास या अन्य किसी सामाजिक विज्ञान भाग नहीं माना जा सकता।

प्रो० श्लाइचर :- का मत है कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को एक स्वतन्त्र अनुशासन मानने के पीछे कई कारण उत्तरदायी हैं जो निम्नलिखित हैं :-

किसी देश विशेष के समाज की तुलना में अन्तराष्ट्रीय समाज जिसमें राज्यों के पारस्परिक सम्बन्धों की जरूरत पड़ती है, का अध्ययन अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था के विकास में सहायक सिद्ध होगा।

अन्तर्राष्ट्रीय समाज का अध्ययन करने के लिए देशीय समाज के अध्ययन की पद्धति से भिन्न पद्धति अपनाया आवश्यक है, जो कि अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के स्वतन्त्र अध्ययन से सम्भव है।

अध्याय – 4

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का अध्ययन करने वाले दृष्टिकोण

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के विभिन्न दृष्टिकोण

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों एवं राजनीति के दृष्टिकोणों या उपागमों में विभिन्नता पाई जाती है। इसका प्रमुख कारण यह है कि अन्तर्राष्ट्रीय वास्तविकताओं के सम्बन्ध में दृष्टिकोण अलग-2 होते हैं। इन्हें विद्वान लोग अपने-2 ढंग से देखते हैं और इन्हीं दृष्टिकोण के आधार पर अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के सिद्धान्तों का निर्माण होता है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को समझने के लिए विभिन्न दृष्टिकोणों का अध्ययन अति आवश्यक है। इसके अध्ययन में विभिन्न दृष्टिकोण अपनाए जाते हैं, जिनमें कुछ प्रमुख निम्नलिखित प्रकार से हैं:-

ऐतिहासिक या परम्परावादी दृष्टिकोण :- परम्परावादी दृष्टिकोण अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन-क्षेत्र में एक प्रमुख दृष्टिकोण है, जिसका आधार दर्शन, इतिहास और कानून है। यह इतिहास को एक प्रयोगशाला मानता है, जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का विश्लेषण और परीक्षण होता है। अतीत की आधारशिला पर ही वर्तमान का निर्माण होता है। वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय समस्याएँ अतीत की परम्पराओं और विचारों से बहुत प्रभावित रहती हैं। उसी प्रकार से वर्तमान की घटनाएँ भविष्य का निर्धारण कर देती हैं। इस दृष्टिकोण में परिवर्तन और विकास का नियम सदैव अस्तित्व में रहता है। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का समकालीन स्वरूप एक क्रमिक तथा दीर्घ विकास का फल है। साधारणतया ग्रेट ब्रिटेन तथा ब्रिटिश शिक्षा

Date: / /
Page: 13

प्रणाली से प्रभावित देशों में इतिहासपरक दृष्टिकोण का 1950 ई० तक पर्याप्त प्रभाव रहा। यद्यपि ऐसा माना जाता है कि ऐतिहासी पद्धति का प्रयोग करने पर तत्कालीन परिस्थितियों एवं भावनाओं का प्रभाव पड़ता है जिसके चलते निष्कर्ष अशुद्ध हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त किसी भी स्थिति में सम्पूर्ण भूतकालीन घटनाओं का अध्ययन असम्भव है।

आदर्शवादी दृष्टिकोण :- दूसरे विश्वयुद्ध से पूर्व अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में आदर्शवादी दृष्टिकोण का प्राधान्य था। प्रथम विश्व-युद्ध के उपरान्त यद्यपि कूटनीति के इतिहास का महत्व अभी बना हुआ था किन्तु दृष्टिकोण में परिवर्तन हुआ। आदर्शवाद के समर्थक, जिनमें सर एल्फ्रेड जिमर्न, फिलिप नोएल बेकर, जेम्स, शॉटवेल मुख्य हैं। 'शक्ति की राजनीति' को अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का एक अस्थाई पक्ष मानते हैं। व अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में एक ऐसे विश्व की कल्पना करते हैं। जिसमें न तो युद्ध के लिए कोई स्थान होगा, न ही विषमता के लिए, न ही अनैतिकता के लिए और न ही अत्याचार के लिए। आदर्शवादी ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय समाज की तस्वीर प्रस्तुत करता है, जो शक्ति राजनीति और हिंसा से दूर हो। इस दृष्टिकोण का सम्बन्ध 'क्या होना चाहिए' से है, यह दृष्टिकोण अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के बारे में हमें यह विश्वास दिलाता है कि शिक्षा, विज्ञान और अन्तर्राष्ट्रीय संगठन की सहायता से संसार को अधिक अच्छा एवं शान्तिमय बनाया जा सकता है।

यथार्थवादी दृष्टिकोण :- अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के यथार्थवाद का विकास मानव-स्वभाव तथा ऐतिहासिक अनुभव के आधार पर आदर्शवाद की प्रतिक्रिया स्वरूप होता है। इस दृष्टिकोण के सैद्धान्तिक पक्ष का विकास 20 वीं शताब्दी के तीसरे दशक में तत्कालीन यूरोपीय राजनीति के परिणामस्वरूप हुआ। मार्गेन्थो ने ही अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में यथार्थवादी को एक पूर्ण सिद्धान्त के रूप में प्रस्तुत किया है। यथार्थवाद विचारों के उस समूह का नाम है, जो सुरक्षा और शक्ति के घटकों के ध्वनितार्थों को ही अपने चिन्तन का विषय मानता है।

समन्वयवादी दृष्टिकोण :- अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों एवं राजनीति में यथार्थवादी व आदर्शवादी दोनों दृष्टिकोणों के अलावा, इनके मध्य का एक अन्य मार्ग समन्वयवादी दृष्टिकोण है। यह दृष्टिकोण निराशावाद व आशावाद के बीच समन्वय स्थापित करता है। समन्वयवाद अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से देखता है। यह मानता है कि कोई पूर्वाग्रह या पूर्व मान्यता न रखते हुए, विश्व राजनीति की गतिविधियों को तटस्थ होकर देखा जाए, उनके तथ्यों का संग्रह व विश्लेषण किया जाए। यह उचित नहीं है कि हम पहले किसी सिद्धान्त को निश्चित कर लें और तब उसके अनुसार ही अन्तर्राष्ट्रीय जगत की घटनाओं की व्याख्या करें। उचित मार्ग तो यही है कि अन्तर्राष्ट्रीय जगत की घटनाओं के माध्यम से ही परिणाम तक पहुँचा जाए। दोनों को ही एक-दूसरे से ग्रहण करना चाहिए।

SRI GURU ...
SRI JIWAN NAGAR (SIRSA)

Class: M.com III sem Roll No. 22123816800I Subject: Ethics Date: 21 JAN 2020

Qus1- Explain the meaning of term "good governace? Explain its evolution in Indian Context.

Qus-2 Define chief Executive officer. Explain roles and responsibilities of CEO?

Qus-3 Meaning of Finance; Ethical issues in finace

Ans- Finance - वित्त का अर्थ है निधि या अन्य वित्तीय संसाधन, यह पैसे और बाजार से संबंधित मामलो से संबंधित है। वित का क्षेत्र समय धन और जोखिम की अवधारणा को संदर्भित करता है और वे कैसे परस्पर संबंधित है बैंकिंग के मुख्य सूत्रधार है। वित्तीय विश्लेषण के माध्यम से कोई भी कंपनी या व्यवसाय वित्तिय निवेश करने, कंपनी का अधिग्रहण करने, कंपनी को बेचने, वर्तमान भूत और भविष्य में अपने व्यवसाय की वित्तीय स्थिति जानने का निर्णय ले सकता है यह रणनीतिक वित्तिय निवेश लेने का मे दूसरो के साथ प्रतिस्पर्धा मे बने रहने मे मदद करता है। वित्त व्यवसाय की रीढ है बिना वित्त के कोई व्यवसाय नही चला सकता।

Ethical issues in finance

1. वित्तिय विवरणों में धोखाधड़ी = (i) नकली राजस्व

2) छुपी देनदारियां और व्यय
3) कपटपूर्ण संपत्ति मूल्यांकन
4. अनुचित या धोखाधड़ी प्रकटीकरण या चूक

1. वित्तीय बाजारो में नैतिक मुद्दे :—
- धोखा : प्रासंगिक जानकारी को गलत तरीके से प्रस्तुत करने का कार्य
- मथन : एक दलाल द्वारा ग्राहकों के खाते के लिए अत्यधिक या अनुचित व्या
- अनुपयुक्तता
- बाजारो मे बईमानी

3. इनसाइडर ट्रेडिंग →

ट्रेडिंग अनिवार्य रूप मे कंपनी से संबंधित गोपनीय जानकारी के आधार पर कंपनी की प्रतिभूतियों में लेन देन को दर्शाता है। जो प्रकाशित नहीं है। शेयर धारकों के प्रति SEBI के नियमो 1992 के तहत परिभाषित कंपनी के अधिकारियों या उससे जुड़े व्यक्तियों के भरोसेमंद कर्तव्यों का उल्लंघन है।

(4) शत्रुतापूर्ण अधिग्रहण —

एक शत्रुतापूर्ण अधिग्रहण, जिससे खरीदी जा रही कंपनी खरीदना नहीं चाहते या बोली लगाने वाले विशेष खरीददार द्वारा खरीदी नहीं जाती कोई ऐसी वस्तु कैसे खरीद सकता है। जो बिक्री के लिए न हो।

5. फर्म के लिए दायित्व —

कर्मचारियों को कम्पनी के कार्यों के लिए काम पर रखा जाता है। कर्मचारी वित्तीय लाभ के लिए विशेष कम्पनी को काम करने के लिए बाध्य कर सकते है।

(6) अपने पद का दुरुपयोग (7) रिश्वतखोरी और रिश्वत (8) तीसरे पक्ष के लिए दायित्व और
(9) कर्मचारी का स्वार्थ।

Ans-2 CEO :— एक मुख्य कार्यकारी अधिकारी कम्पनी मे सर्वोच्च पद का कार्यकारी होता है, और उनकी प्राथमिक जिम्मेदारियो मे कम्पनी के समग्र संचालन और संसाधनो का प्रबंधन करने वाले प्रमुख कार्पोरेट निर्णय लेना और निदेशक मंडल और कार्पोरेट संचालन के बीच संचार के मुख्य बिंदु के रूप मे कार्य करना शामिल है।

CEO एक संगठन मे शीर्ष पद पर होता है। और मौजूदा योजनाओं और नीतियो को लागू करने। व्यवसाय के सफल प्रबंधन को सुनिश्चित करने और भविष्य की रणनीति निर्धारित करने के लिए जिम्मेदार होता है।

Role :—

- एक नेता के रूप मे
- बोर्ड को सलाह देता है।
- एडवोकेट, प्रचार समर्थन और हितधारक परिवर्तन संबंधित मिशन।
- सूचना देने वाला
- यह सुनिश्चित करता है कि कर्मचारियों और बोर्ड के पास पर्याप्त और अधार जानकारी है।
- बदलाव के अवसर के लिए भविष्य की ओर देखता है।
- एक निर्णय कर्ता के रूप मे
- नीतियों और योजना सिफारिशों को तैयार करता है।
- कर्मचारियो द्वारा संचालन मे कार्रवाई के पाठ्यक्रम के निर्णय या समर्थन करता है
- एक प्रबन्धक के रूप मे =

- संगठन मे विदेशी संचालन
- योजनाओ को क्रियान्वित करना।

→ बोर्ड डेवलपर के रूप में →
- बोर्ड के सदस्यो का चयन व मूल्यांकन
- अभिविन्यास के दौरान बोर्ड का समर्थन और मूल्यांकन करना।

Responsibilities

① कार्यक्रम, उत्पाद और सेवा वितरण :- ओवरसीज डिजाइन, मार्केटिंग कार्यक्रमो उत्पादो और सेवाओ का प्रचार।

② वित्तीय कर जोखिम और सुविधाए प्रबंधन :- बोर्ड की मंजूरी के लिए वार्षिक बजट की सिफारिशे करता है, और वर्तमान कानूनो और विनियमो के अनुसार उन बजट दिशानिर्देशो के भीतर संगठन के संसाधनो का विवेकपूर्ण प्रबंधन करता है।

③ मानव संसाधन प्रबंधन :- मानव संसाधनो का प्रभावी प्रबंधन करता है अधिकृत कार्मिको की नीतियो के अनुसार संगठन को और ऐसी प्रक्रियाओ जो पूरी तरह से मौजूदा कानूनो और विनियमो के अनुरूप हो

④ सामुदायिक और जनसंपर्क :- संगठन और उसके मिशन, कार्यक्रमो उत्पादो और सेवाओ को लगातार प्रासंगिक हितधारको के लिए मजबूत सकारात्मक छवि मे प्रस्तुत करने का आश्वासन देता है।

Ans. 3 Good Governance → सुशासन तब कहा जाता है। जब किसी संगठन में सभी हितधारकों के हितों को ध्यान में रखा जाता है। और सभी हितधारकों की सामजस्यपूर्ण भागीदारी के माध्यम से विचार उत्पन्न करता है।

Good Governance → भारत में सुशासन की पहल, 10वीं योजना के दस्तावेज ने सुशासन की पहचान योजना के 3 उद्देश्यों को प्राप्त करने को सुनिश्चित करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण कारक के रूप में की है। शक्ति का विकेन्द्रीकरण और नागरिक सशक्तिकरण, राज्य और राज्य क्षेत्र के माध्यम से प्रभावी लोगों की भागीदारी, सरकार की विभिन्न एजेंसियों और कार्यक्रमों के बीच अधिक तालमेल और समेकन। सिविल सेवा सुधार और भूमि प्रशासन को मजबूत करना। और शासन का उपयोग करना प्रमुख प्राथमिकताओं के रूप में चिन्हित किया गया है।

RTI Act 2005 को लागू किया गया था। यह संघ और स्थानीय Agencies स्थानीय सरकारों और समाज पर लागू होता है।

- 27 प्रमुख क्षेत्रों के लिए ई-गवर्नेंस योजना को अपनाया गया था जो सेवाओं की डिलीवरी में सुधार और सूचना के डिजिटलीकरण में सहायता के लिए तैयार की गई थी।
- नरेगा NRHM और अन्य आयों के तहत सहभागी शासन की पहल शुरू की गई थी
- IVDMA की स्थापना इस महत्वपूर्ण क्षेत्र पर अधिक ध्यान केंद्रित करने और

आपदाओं की प्रतिक्रिया को अधिक प्रभावी बनाने के लिए प्रारंभिक कार्य की शुरुआत की गई थी।

SRI GURU HARI SINGH COLLEGE

SRI JIWAN NAGAR (SIRSA)

No. 7/80

Q.No.	For Examiner's Award only				
	A	B	C	D	Total
1					
2					
3					
4					
5					
6					
7					
8					
9					
10					
Total in Figures					
Total in Words					

I certify that I have myself examined the Answer book.

....

Examiner's full Signature

[To be filled in by the candidate]

(For Candidate)

1. Roll No. 1222382002132

2. Class B.A. 2nd year 3rd sem

3. Subect Hindi

4. Date 25/10/23

INSTRUCTIONS

I Do not tear out any Paper from the Answer Sheet

II Copying is strictly prohibited.

III Write legibly & neatly

IV Do not bring any extra paper in the Examination Hall.

V Do not write your name.

VI No candidate will be allowed to leave the Examination hall before half time is over.

VII Do not write on the back of title Page

[To be filled in by the candiddate]

Roll No.

(i) In Figure ~~132~~ 1222382002132

(ii) In Words one three two

1 Class B.A. 2nd year 3rd sem

2 Section B

3 Subject Hindi

4 Date 25/10/23

1. (क)

उत्तर (क) **संकेत** :-

तू पावेगी तर नगर में ---- वज्र की स्वच्छता है।

प्रसंग :-

प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक 'आधुनिक हिंदी कविता' में से संकलित 'पवनदूती' नामक कविता में से ली गई है। इसके कवि 'श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध' है। इस कविता के माध्यम से राधा के वियोग की स्थिति का वर्णन किया है।

व्याख्या :-

इन पंक्तियों में कवि ने राधा के वियोग की स्थिति का वर्णन किया है। जब श्रीकृष्ण मथुरा चले जाते है तथा वहीं रहते है तब राधा पवन के माध्यम से उन्हे संदेश भेजना चाहती है। तब वह पवन को कहती है कि तुझे रास्ते में एक अलग भू-खंड दिखेगा। वहाँ शोभा से युक्त एक राजमहल दिखेगा। वहाँ बगीचो में अलग ही सुषमा विद्यमान होगी। तालाब की सुंदरता, सूर्य की किरणों से सुषमा छीन लेती है।

अर्थात वहाँ का राजमहल की शोभा बहुत ही सुंदर है। बगीचों में सुषमा विद्यमान है तथा वहाँ सरोवर अत्यंत स्वच्छ है।

5/7

विशेष :-

1. भाषा सरल तथा सहज है।
2. कवि ने राजमहल, तालाब की वर्णन किया है
3. भाषा विषयानुकूल है।

(ग) **संकेत** :-

"रुद्ध कोष — — — अंक वज्र गर्जन से बादल।

प्रसंग :-

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक 'आधुनिक हिंदी कविता' में से संकलित 'बादल राग' में से ली गई है। इसके रचियता 'सूर्यकांत त्रिपाठी निराला' है। इसमें कवि नीचे वर्गों के लोगों के शोषण के बारे में तथा उच्च वर्ग के लोगों के अत्याचार के बारे में वर्णन किया है।

व्याख्या :-

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने बताया है कि अमीर वर्ग के लोग अपने धन को संचित

करके रखते हैं तथा दूसरो को इससे वचिंत रखते हैं। पर तभी भी उन्हे संतोष नहीं होता है। वे अपनी पत्नी के अंग से लिपटे होने के बावजूद बादल की गर्जना से कांप उठते हैं। वे क्रांति से डरते हैं। वे हमेशा भय में रहते हैं।

5½

विशेष :-

1. भाषा सरल तथा सहज है
2. भाषा भावानुकूल है
3. ~~किसे~~ वीर रस का प्रयोग किया गया है।

② .

(क) 'अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध'

जीवन परिचय :-

ब्रज भाषा के विदवान कवियो मे अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध का महत्वपूर्ण स्थान है। इनका जन्म उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले के निज़ामाबाद शहर में 1865 ई. को हुआ। इनके पिता का नाम भोलासिंह था। इन्होंने फारसी

भाषा में शिक्षा प्राप्त की। ये मिडिल तक पढे तथा आगे की शिक्षा इन्होंने घर पर ही की। घर पर इन्होंने हिंदी, उर्दू तथा अंग्रेजी का अध्ययन किया। घर की स्थिति खराब होने के कारण इनको नौकरी करनी पड़ी। बाद में ये हिंदू विश्वविद्यालय के प्राध्यापक बने। 1947 ई. को इनका निधन हो गया।

⇒ **काव्यगत ~~विशेषताएं~~ रचनाएं :-**

काव्य :- प्रिय प्रवास, ~~रस~~ रसकलश, उद्‌बोधन

उपन्यास :- प्रियकांता, अधखिला फूल, ठेठ हिंदी का ठाठ

आलोचना :- हिंदी साहित्य तथा इतिहास

⇒ **साहित्यिक विशेषता :-**

हरिऔध जी ब्रज भाषा के महानतम कवियों में से एक इन्होंने अपनी रचनाओं में मानव कल्याण, क्रांति का संचालन, वियोग रस आदि का वर्णन किया है। इन्होंने अपनी रचनाओं में मुसलमानों राजाओं के विरुद्ध क्रांति का संदेश दिया है। मानव कल्याण भी इन्होंने बताया है। प्रिय प्रवास इनकी महानतम रचना है जिसमें कवि ने श्रीकृष्ण के मथुरा जाने के उपरांत राधा के वियोग दशा का वर्णन किया है।

उन्होंने राधा के माध्यम से मानव कल्याण का संदेश दिया है। राधा वियोग रस में डूबी हुई हैं परंतु वह दूसरों के दुःख को भी हरना चाहती हैं तभी वह पवन से कहती हैं कि रास्ते में मिलने वालों को दुःखों को तुम दूर करना।

⇒ जाते-जाते कोई, कलति दिखावे
होकर सन्निकट, उसकी कलतियाँ मिटाना

इसी प्रकार कवि राधा के माध्यम से दूसरो के दुखो को दूर करना चाहता है तथा मानव कल्याण चाहता है

⇒ तू पावेगी ~~नगर~~ तर में, एक भू-खंड न्यारा।
× × × × × × ×
× × × × × ×
छीन लेते सरतेर जहाँ, वज्र को स्वच्छता है।।

इसके माध्यम से हमें पता चलता है कि कवि चित्रात्मक शैली का प्रयोग करता है तथा उस प्रकृति के नजार को बिंब योजना के माध्यम से हमें प्रस्तुत करता है। अपनी कविताओं में कवि प्रकृति सौंदर्य का वर्णन किया है।

7
1
2
3

भाषा शैली :-

कवि की ब्रज भाषा हैं। पवनदूती में कवि ब्रज भाषा का प्रयोग किया हैं। ब्रज भाषा कोमल है तथा सरल हैं। कवि ने अपनी रचनाओं मे श्रृंगार, वियोग तथा संयोग रस का प्रयोग किया हैं। अलंकारों में शब्दालंकर तथा अर्थालंकार दोनों का प्रयोग किया हैं। मानवीकरण, अनुप्रास, अतिशयोक्ति, रुपक तथा उपमा अलंकारो का प्रयोग किया है। कवि ने छंद का भी प्रयोग किया हैं।

निष्कर्ष :-

हरिऔध जी महानतम कवि हैं। जिन्होने अपनी रचनाओं द्वारा मानव कल्याण का संदेश दिया हैं। उन्होंने अपनी रचनाओ द्वारा ब्रज भाषा तथा अपने साहित्य को शिखर पर पहुँचाया हैं।

7

1. 17 सर्ग

2. रंग में भंग

3. 1936 ई.

(4) वीर रस

(5) ब्रज भाषा

(6) रामचंद्रिका

(7) (1) छाया अनुवाद (2) शब्द अनुवाद

(8) अंग्रेजी भाषा में

8

(6)

(घ) कम्प्यूटर :-

कम्प्यूटर एक इलेक्ट्रॉनिक यंत्र है जिसके द्वारा हम सूचना ग्रहण कर सकते है तथा दि दी गई सूचना का विश्लेषण कर सकते है

कम्प्यूटर का महत्व :-

1. शिक्षा के क्षेत्र में :-

कम्प्यूटर को आधुनिक युग मे हर कोई जानता है चाहे वह गाँव का बच्चा ही हो

अब online शिक्षा का चलन है। अब शिक्षक तथा शिष्य को भारी- भरकम पुस्तक लिजाने की जरुरत नहीं होती बस कम्प्यूटर में वह पुस्तक डाउनलोड की जा सकती है। सारा डाटा कम्प्यूटर मे collect होता है। आनलाईन माध्यम से बच्चे घर बैठे शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

(2) व्यवसाय में :- व्यवसाय में बड़ी- लम्बी गणना कम्प्यूटर में एक मिनट में की जा सकती है किसी भी फाईल को कम्प्यूटर मे स्टोर किया जा सकता है। वह कभी भी खराब नहीं होती

(3) मनोरंजन :- आज के युग में कम्प्यूटर का प्रयोग हर काम मे किया जाता है जिसमें मनोरंजन एक है इसमें हम फिल्म देख सकते है, विडियो गेम्स खेल सकते हैं तथा गाने भी सुन सकते है। यह मनोरंजन का सबसे अच्छा साधन है।

(4) बैंकों में :- बैंकों में इसका बहुत महत्व है। लाखों-करोड़ो व्यक्तियों के डाटा को कम्प्यूटर में स्टोर किया जाता है। नई स्कीम, बीमा योजना आदि कम्प्यूटर पर भेजी जा सकती है।

(5) सरकारी कार्यों मे (6) सैना में

ब) ई-मेल :-

ई-मेल इलेक्ट्रानिक मेल है जो एक कम्प्यूटर से दूसरे कम्प्यूटर पर भेजा जातासकता है। ई-मेल को हम आसान भाषा में डाक कहते हैं पर जो डाक इलेक्ट्रानिक माध्यम से एक कम्प्यूटर से दूसरे कम्प्यूटर पर भेजी जाती है उसे ई-मेल कहते है। ई-मेल के लिए आवश्यक है Email-ID का होना। ई-मेल hotmail तथा yahoo वेबसाईट द्वारा भेजी जाती है। ई-मेल वन-वे माध्यम है। यह टेलीफोन की तरह नहीं कि दो व्यक्ति आपस में बात कर सके यह सिर्फ एक व्यकित द्वारा भेजी जाती है अगर आपका कम्प्यूटर बंद भी हो तो वह मेल आपके कम्प्यूटर में save हो जाती है। आधुनिक युग में डाक की जगह E-mail का उपयोग किया जाता है। यह विश्वसनीय है। यह सालों तक आपके कम्प्यूटर में सेव रहती है। ई-मेल भेजना बहुत आसान है यह कम-खर्चीला साधन है।

3/4

(3) (क)
उत्तर

③ (क)

आधुनिक हिंदी काव्य

उत्तर जयशंकर प्रसाद ~~रीतिकाल~~ के महानतम कवि हैं। उनकी रचनाओं में मानव कल्याण तथा लोक कल्याण की भावना रहती है। उनके काव्य की यह विशेषताएँ है कि उनकी रचनाओं में ब्रज भाषा का प्रयोग किया जाता है तथा संस्कृत तुल्य शब्द, अंग्रेजी, हिंदी, उर्दू, फारसी आदि के शब्दों का प्रयोग होता है। उनकी रचना 'आँसू' वियोग रस काव्य महानतम उदाहरण है। आँसू कविता में कवि प्रकृति चित्रण, प्रिय के नख-शिख, अभिलाषा, श्रृंगार रस उन्माद, दैहिक सोपान, मानसिक सोपान आदि का वर्णन किया है। आँसू कविता में अपनी चित्रतात्मक शैली का प्रयोग किया है जिसमें माध्यम से श्रोता उसको अपनी मस्तिष्क में आसानी से समझ सकता है। अपनी सोच तथा विचारो का कवि ने बहुत ही सुंदर बिंब योजना की है। जिससे श्रोता का मन प्रफुल्लित हो जाता है। उन्होंने वियोग रस का सुंदर चित्रण किया है। जयद्रथ वध द्वारा कवि ने अच्छाई की बुराई पर जीत तथा परमात्मा का स्वरुप तथा उनकी शक्तियों को प्रदर्शित किया है। अतः अपने काव्य में अपने विचारो द्वारा कवि ने अपने साहित्य को शिखर पर पहुँचाया है।

3/6

(ग) उत्तर 'जागो फिर एक बार' कविता 'सूर्यकांत त्रिपाठी निराला' द्वारा लिखी गई है। यह आधुनिक हिंदी काव्य के छायावादी कवि है। इनकी रचना जागो फिर एक बार वीर रस का उदाहरण है। अपनी दूसरी रचनाओं की तरह निराला जी ने इसमें क्रांति का समावेश किया है। उन्होने शिवाजी, गुरु गोबिंद सिंह, ऋषि मुनियो के माध्यम से हमारे युवाओं को संदेश दिया है कि तुम वीर हो साहसी हो तुम्हारे आगे सब तुम्हारे चरणो की धूल के समान है। गुरुगोबिंद सिंह जी के द्वारा उन्होने बताया कि तुम एक सवा लाख के बराबर हो। तुम महान हो तुम साहसी हो।

(घ) 1

3

⇒ सवा लाख से एक भिड़ाऊ लड़ाऊ
निज गुरु गोबिंद सिंह नाम कहाऊ।

2

इसमें कवि गुरुगोबिंद सिंहजी द्वारा युवाओं मे क्रांति की चिंगारी उत्पन्न कराई है। हमारे पुराण तथा ऋषि मुनियों ने कहा कि तुम्हारी बराबरी कोई नही कर सकता तुम्हे अपनी ही नही पुरी दुनियाँ की रक्षा करना है। और सभी तुम्हारे पैरो की धूल के समान है। तुम वीर, धीर, महान योद्धा हो तो तुम जागो तथा क्रांति की शुरुआत करो अंत कवि का उद्देश्य है हमारे युवाओ मे जोश भरना तथा क्रांति के प्रेरित करना।

(घ) 'कुरुक्षेत्र' के रचियता 'रामधारी सिंह दिनकर' हैं। उन्होने अपनी रचना द्वारा कुरुक्षेत्र में महाभारत के कारणों पर प्रकाश डाला है। उन्होंने अपनी रचना द्वारा मानव कल्याण, जन कल्याण का संदेश दिया है।

3½

① **युद्ध के परिणाम** :-

महाभारत युद्ध में जो जिता वह भी निराश था। महाभारत युद्ध के खत्म होने के उपरांत युधिष्ठिर कहते हैं कि इन सभी की हत्या का मैं जिम्मेवार हूँ। क्योंकि युद्ध के खत्म होने के बाद कई हजारो व्यक्तियों की मौत हुई। हजारों औरतों की मांग सुनी हो गई थी अनेक बच्चे अनाथ हो गये थे भीष्म पितामह कहते हैं कि अगर मैं चाहता तो इस भीषण युद्ध को रोक सकता था परंतु अपने कर्तव्य के कारण यह मैं नही कर सका।

② **युद्ध अंत की स्थिति का वर्णन** :-

युद्ध के अंत के बाद कवि ने भीष्म तथा युधिष्ठिर के द्वारा बताया है कि युद्ध कोई हो चाहे कोई जीते परंतु परिणाम दोनो को भुगतना पड़ता है। अंत मे मनुष्य के हाथों मे सिर्फ पश्चाताप रह जाता है। वह सभी को खो देता है महाभारत के युद्ध में हजारो की जाने गई उसका परिणाम बहुत भयंकर था। इसलिए युद्ध का परिणाम जाने बिना युद्ध नहीं करना चाहिए। अंतत कुरुक्षेत्र के महाभारत के युद्ध का परिणाम बताकर कवि मानव कल्याण का उपदेश देता है।

(ङ) पवनदूती नामक कविता प्रियप्रवास से ली गई है। इसमें कवि अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध ने उस समय का वर्णन किया है जब श्रीकृष्ण मथुरा अवगमन करते हैं तथा सारे ब्रीजवासी वियोग में डूब जाते हैं तथा श्रीकृष्ण का संस्मरण करते हैं। इसी कविता में कवि ने राधा की वियोग दशा को बताया है कि वह वियोग में किस प्रकार लीन है वह पवन के द्वारा अपना संदेश भेजती है। वह श्रीकृष्ण का नख-शिख का वर्णन करती है तथा वेशभूषा का भी। वह श्रीकृष्ण की एक झलक पाने को तरस गई है। वह श्रीकृष्ण के पैरों को छू कर आ जा मैं तुझे गले लगाकर पवित्र हो जाऊंगी। ^कहती है पवन तु राधा वियोग अवस्था में होने के बावजूद दूसरों का भला सोचती है। वह अपने दुख को त्यागकर दूसरों को सुख देखना चाहती है इसलिए वह पवन से कहती है कि अगर तुझे रास्ते में दुखी मिले तो उसके दुखों को तू हर लेना। राधा अपने दुख को न देखकर दूसरों का सुखी देखना चाहती है तथा मानव कल्याण का संदेश देती है उदाहरण :-

जाते-२ कोई क्लांति दिखाते,
होकर सन्निकट, उसकी क्लांतियाँ मिटाना।।

(4) (क) **रीतिकाल** :-
रीतिकाल का समय 1700 से 1900 सम्वत है। इसमें काल में भूषण, घनानंद, बिहारी, आलम जैसे महान साहित्यकार हुए हैं। रीतिकाल काल को समझने के लिए हमें उनकी परिस्थितियों का अध्ययन करना होगा जो निम्न हैं :-

(1.) **सामाजिक परिस्थितियाँ** :-
उस समय मुगल साम्राज्य का पतन होना शुरु हो गया है। वर्ग दो हिस्से मे बंट चुका था। अमीर तथा गरीब। अमीर गरीबो का शोषण करते थे। मुसलमान हिंदुओं पर अत्याचार करते थे। सामाजिक स्थिति शोचनीय थी। समाज में अनेक कुरीतियाँ आ गई थी। सती प्रथा, बाल-विवाह, पर्दा प्रथा आदि कुरीतियाँ आ गई थी। अमीर वर्ग भोग-विलास में लीन रहते थे। गरीब वर्ग अशिक्षित होता जा रहा था।

(2) **आर्थिक परिस्थितियाँ** :-
आर्थिक रुप से साम्राज्य का पतन हो चुका था। अकबर ने राज्य विस्तार किया। जहाँगीर तथा शाहजाह ने कला का विकास किया परंतु औरंगजेब ने कला का हनन किया। इसी बीच आर्थिक स्थिति शोचनीय हो गई। आर्थिक स्थिति अपने पतन स्तर पर पहुँच गई। समाज में अव्यवस्था स्थापित हो गई। अलग-अलग स्वतंत्र राज्य स्थापित हो गए।

③ (राजनैतिक स्थिति) :- औरंगज़ेब की कट्टरता के कारण हिंदूओं ने अपना धर्म बदल दिया। औरंगजेब की मृत्यु के बाद अराजगता फैल गई। अंतिम शासक शक्तिशाली नही थे वे अयोग्य थे जिस कारण उत्तर में सिक्खो तथा मराठा का शासन स्थापित हो गया। सभी स्वतंत्र राज्य स्थापित हो गए तथा इसी बात का फायदा उठाया अंग्रेजो ने उन्होने मुगल सता का अंत कर दिया।

(ख)

④ (धार्मिक स्थिति) :- धर्म के नाम पर ढोंग होने लगे। वैष्णव धर्म की आगे शाखाएँ बन गई। राधा-कृष्ण सिर्फ विलासता का प्रतीक बन गए। श्रीराम सिर्फ एक किरदार बनकर रह गए मुल्ला अपनी ढोंग द्वारा भोली जनता को लूट रहा था। धार्मिक क्षेत्र में अराजकता थी। 1.
धर्म वर्गो में बट गया था। बौद्ध तथा जैन धर्म का पतन हो चुका था

⑤ (साहित्यिक स्थिति) :- साहित्यिक का क्षेत्र में कोई वृद्धि नही हुई। सभी कवि अपने आश्रयदाताओ के ऊपर लिखते थे। वे सिर्फ उन्हे प्रसन्न करना चाहते थे। इस काल में लक्षित ग्रंथ लिखे गए। 2.
मुक्तक शैली का प्रयोग किया गया। कुछ सिर्फ छंद के सिवाए कोई महत्वपूर्ण उद्भावना नही हुई। परंतु इसी के बाद जुद भूषण जैसे कवियों का उद्‌थान हुआ।

7

निष्कर्ष :-
अतः रीतिकाल में राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक अराजकता फैली हुई थी। इस काल में हिंदुओं की स्थिति शोचनीय थी। गरीब वर्गों का शोषण किया जाता था। साहित्य में छंद के सिवा किसी में विकास नही हुआ। धार्मिक स्थिति शोचनीय थी। समाज दो वर्गों में बंटा हुआ था।

(ख) **रीतिकाल :-**
रीतिकाल का समय 1700 से 1900 सम्वत है। इस काल को मिश्र बधुओं ने अलंकृत काल की संज्ञा दी है। रीतिकाल की निम्नलिखित विशेषताएं हैं।

1. **श्रृंगार रस की व्यापकता :-** चाहे वह रीतिमुक्त काव्य हो या रीतिबद्ध काव्य दोनो में श्रृंगार रस की व्यापकता है। इसमें श्रृंगार रस के कवि बिहारी, मतिराम, घनानंद आदि हैं। इसमें नायक-नायिका के नख-शिख, वेशभूषा का सुंदर विर्वण दिया गया उस समय कवि आश्रयदाताओं को प्रसन्न करने के लिए श्रृंगार रस का भरपूर प्रयोग करते थे।

2. **प्रकृति चित्रण :-** बिहारी की 'इश्कलता', आलम की रचनाओं में प्रकृति चित्रण का सुंदर चरित्र चित्रण किया है उस समय कवियों ने नायक-नायिका, फल-फूल आदि पर ही काव्य लिखा।

③ नारी का स्थान :- उस समय नारी को सिर्फ भोग-विलास की सामग्री समझा जाता है। नायिका के रूप में नारी का चित्रण किया जाता था। श्रृंगार रस का प्रयोग नारी की सुंदरता को प्रदर्शित करता था।

④ ब्रज भाषा का प्रयोग :- रीतिकालीन भाषा ब्रज भाषा कहलाती है। इसमें कवियो ने अपने काव्य में ब्रज भाषा का प्रयोग किया है क्योंकि यह कोमल भाषा है जिसे हर कोई आसानी से समझ सकता है। बिहारी, आलम तथा मुसलमान कवियों ने भी इसका प्रयोग किया है।

⑤ लाक्षणिक ग्रंथ :- रीतिकाल में लाक्षणिक ग्रंथ लिखे गए। साहित्य में कोई विकास नही हुआ। ज्यादातर आश्रयदाताओ के कवियो ने सिर्फ लाक्षणिक ग्रंथ लिखे हैं या मुक्तक ग्रंथ उन्होंने संस्कृत ग्रंथो पर टीकाए लिखी हैं।

⇒ निष्कर्ष :-

अतः इस काल में लाक्षणिक ग्रंथ लिखे गए। संयोग व वियोग पर आधारित रचना की गई। प्रकृति की बिंब योजना की गई। प्रकृति चित्रण किया गया। छंद में विकास हुआ। अलंकारो का प्रयोग

(5) (ग) 'रीतिमुक्त काव्यधारा के महान घनानंद हैं। जिन्होने रीतिबद्ध से हटकर मुक्त काव्य धारा लिखी। इसके अलावा आलम, बिहारी आदि ने रीतिमुक्त काव्यधारा लिखा। आलम की 'इश्ककला' बिहारी की 'इश्कलता' इसका उदाहरण है। विशेषताएँ

1. **शृंगार रस का प्रयोग** :- शृंगार रस का कवियों ने बहुत ही सुंदर वर्णन किया है। इसमें संयोग रस तथा वियोग रस का बहुत सुंदर मार्मिक वर्णन किया है। वियोग रस का अत्यंत मार्मिक विवरण किया जिसके माध्यम से श्रोता का मन प्रफुलित हो जाता है। वियोग रस मे बिहारी की महानतम रचना है इसमें नायक-नायिका के नख-सिख का सुंदर चित्रण किया है।

(2) ~~लक्षणिक ग्रंथ~~ **प्रकृति चित्रण तथा अलंकारों का प्रयोग** :- **वीर रस,** रीतिमुक्त काव्यधारा में कवि आश्रयदाताओं से मुक्त होकर वीर रस का प्रयोग किया है जिसमे भूषण एक हैं। अन्य कवियों ने भी वीर रस का प्रयोग किया। क्रांति के लिए। प्रकृति चित्रण मे पहाड़ों, फल-फूल आदि का चित्रण किया है अंलकारों मे शब्दालंकार तथा अर्थालंकार दोनों का प्रयोग किया है

(3) **लोक जीवन का उल्लेख** :- इन काव्यों में संयोग रस मे परिहास, हर्ष उल्लास तथा त्योहारों का वर्णन किया है। जैसे तीज-त्योहार। काव्यों मे लोक कल्याण की भावना भी विद्यमान है।

निष्कर्ष :- अत: रीतिमुक्त काव्यधारा में शृंगार रस, वीर रस, प्रकृति चित्रण आदि का वितरण किया है। इसमें कवियों ने लक्षणिक ग्रंथ नहीं लिखे।